रिकॉर्ड :– मुझको सहारा देने वाले.... ये जिन बच्चों को बाप से वर्सा मिल रहा है उन्हों के शुक्रिया का गीत है। इस गीत को रिफाइन करके बनाना चाहिए। ये जो दुनिया में कलियुगी पतित बाप, शिक्षक, गुरु हैं, वो जो दे न सके, वो आपको पतित–पावन बाप, शिक्षक, सत्गुरु दे रहे हैं। अब ये तो है तुम बच्चों का अनुभव। इस समय प्रैक्टिकल गीता का पार्ट रिपीट हो रहा है। कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाने वाला बाप अब सुख दे रहे हैं। वो हमें क्या देते हैं? कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाने वाला बाप अब सुख दे रहे हैं। वो हमें क्या देते हैं और एवज में क्या लेते हैं, वह भी हम लिख सकते हैं। श्रीमत भगवत गीता के कैनन(कथन) अनुसार 3 सेनाएँ बरोबर अब उपस्थित हैं। ये भी समझते हो कि विनाश काले विपरीत बुद्धि अर्थात् परमपिता प० से न प्रीत, बल्कि दुश्मनी है; क्योंकि निंदा अथवा ग्लानि दुश्मन की की जाती है। तो प० को भी दुश्मन बनाए दिया है। बरोबर 3 सेनाएँ भी खड़ी हैं। यादव भी हैं, कौरव भी हैं, पाण्डव सम्प्रदाय भी है। यादव और कौरव दोनों हैं नास्तिक। परमपिता प० से विनाश काले विपरीत बुद्धि। उल्टा उनकी ग्लानि करते हैं। तो वो है विनाश काले विपरीत बुद्धि, नास्तिक। तुम ब्राह्मण कुल भूषण हो आस्तिक। तुम जानते हो, हम तन–मन–धन से उन पर बलि चढ़े हैं। बलि चढ़ना माना बच्चा बनना। वो है ही स्वर्ग, नई दुनिया का रचता। नई दुनिया में है देवी–देवताओं का राज्य और ये है भी राजयोग, जिससे तुम बच्चे नर से ना० बन रहे हो। ये तुम लिख सकते हो कि इस समय ड्रामा अनुसार सृष्टि पर 3 सेनाएँ खड़ी हैं। एक है विनाश काले विपरीत बुद्धि नास्तिक। दूसरे, विनाश

काले प्रीत बुद्धि आस्तिक। वो भी अपने अनेक प्रकार के प्लैन बनाए रहे हैं और प्लैन सदैव बनाते हैं उन्नति के लिए। उस पर इतना खर्च करते हैं। हेल्थ मिनिस्टर, वेल्थ मिनिस्टर, लॉ मिनिस्टर सभी हैं। सब अपना–2 पुरुषार्थ करते हैं; परन्तु गीता के कैनन(कथन) अनुसार कौरवों और यादवों का तो विनाश होना है। तुम हो पाण्डव गवर्मेन्ट। तुम भी हेल्थ मिनिस्टर, वेल्थ मिनिस्टर हो। तुम हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस वाली सतयुगी देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। बाकी वो जो विनाश काले विपरीत बुद्धि हैं, उन सभी का विनाश होना है। तुम पाण्डवों का भी प्लैन है, हेल्थ–वेल्थ–हैपीनेस स्थापन करने का और तुम पाण्डवों का पति है भगवान, तो ये क्लीयर कर दिखाना है कि 3 सेनाएँ हैं। यादव सम्प्रदाय तो हुई उस तरफ, बाकी कौरव सम्प्रदाय और पाण्डव सम्प्रदाय। कौरवों की पाण्डवों से नहीं बनती थी। उन्हों को दुख देते थे; क्योंकि नास्तिक थे। आस्तिक कभी दुख नहीं देते। गीता में भी है, कौरवों ने दुश्मनी रखी, उन्होंने ही नगन किया। पाण्डव तो नगन कर नहीं सकते। वो आसुरी सम्प्रदाय, ये दैवी सम्प्रदाय। तो इसमें विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए। बहुत बच्चे मिनिस्टर्स को पत्र लिख रहे हैं। उन्हों के लिए बाप के डायरैक्शन हैं कि बड़े–2 पत्र नहीं लिखने हैं। ये सिद्ध करना है कि गीता में भी है कौरव, यादव, पांडव क्या करत भय। बरोबर श्रीमत भगवत गीता द्वारा सतयुगी पवित्र दुनिया की स्थापना हुई है। यादव तो विनाश होने हैं, बाकी बात है कौरवों और पाण्डवों की। वो भी लगा हुआ है कि पाण्डवों की विजय हुई, कौरवों का विनाश हुआ, जो कि प० से विपरीत बुद्धि थे। तो कृष्ण का नाम डालते हैं; परन्तु कृष्ण के साथ कोई भी विपरीत बुद्धि हो न सके। कृष्ण तो गीता का भगवान नहीं था। बाबा गुप्त वेश में था, जिस कारण वो पहचान नहीं सकते थे। न पाण्डवों को पहचानते थे, इस कारण दुश्मनी रखते थे; क्योंकि वो अपवित्र को पवित्र बनाते थे, विख नहीं देते थे। इसलिए अत्याचार करते थे और बच्चियाँ रड़ी मचाती थीं कि शिवबाबा रक्षा करो, दुर्योधन हमें नगन करते हैं। सो बरोबर देख रहे हो, आसुरी सम्प्रदाय माताओं को विख के लिए कितना तंग करते हैं। इसलिए अब बाप आकर ऑर्डिनेस निकालते हैं कि विख पीने वाले मारे जाएँगे। 'कौरव' संस्कृत शब्द है। इस समय तो अनेक भाषाएँ हैं। भगवान ने संस्कृत में श्लोक नहीं सुनाए, ये तो गीता लिखने वालों ने बैठ बनाए हैं। श्लोक से थोड़े ही ज्ञान मिलता है। यहाँ तो सहजयोग और सहज ज्ञान, सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ बताया जाता है। ये तो नॉलेज है, जो पाण्डव सम्प्रदाय को पढ़ाते हैं। गीता में तो बहुत फालतू श्लोक लिख दिए हैं। गीताएँ भी कितनी हैं। बाइबल वा कुरान एक ही है। ऐसे नहीं कहेंगे, ये फलाणे का कुरान, ये फलाणे का। गीताएँ तो अनेक हैं। गाँधी की गीता, तिलक गीता। समझ तो कुछ नहीं सकते। आसुरी बुद्धि हैं। उन्हों को फिर दैवी बुद्धि ही समझाएगी। संजय भी कोई एक नहीं, धृतराष्ट्र भी एक नहीं। माया रावण ने सभी को अंधा, बुद्धि हीन बनाए दिया है। तो ऐसे शार्ट में लिखना चाहिए। गीता को ही उठाना है। गीता से ही स्वर्ग की स्थापना हुई। तो सिद्ध हो जाएगा कि गीता कोई द्वापर की नहीं। स्वर्ग की स्थापना कोई मनुष्य कर न सके। जो मनुष्य जन्म–मरण में आते हैं और पुरे 84 जन्मों में आते हैं, उनको भगवान कह न सके। भगवान तो पुनर्जन्म में नहीं आते। उनका दिव्य जन्म गाया हुआ है। खुद कहते हैं, मैं साधारण बूढ़े तन में आता हूँ। मैं इनके भी जन्म बताता हूँ। जो पूज्य था वो अब पुजारी बना है, फिर पुजारी से पूज्य बनना है। पावन बनते ही हैं स्वर्ग के देवी–देवताएँ। द्वापर कलियुग में स्वर्ग होता नहीं।

कलियुग अंत में भगवान बिगर पतित नर्क को पावन स्वर्ग कोई बनाए नहीं सकता। मनुष्य को क्रियेटर नहीं कहा जाता। हाँ, हद के ब्रह्मा है, जो क्रियेट कर फिर पालना करते हैं। ऐसे तो नहीं कहेंगे, इनका विनाश भी हो। वो रचना जो रचते हैं उनकी वृद्धि होती जाती है। परमपिता प० आकर ऐसी आसुरी सम्प्रदाय के वृद्धि को बंद करते हैं। गवर्मेन्ट भी कहती है ना वृद्धि करना बंद करो; परन्तु (वो) ये नहीं जानते कि अभी की पैदाइश बिच्छू–टिंडण हैं। बाप कहते हैं– देखो, सभी एक/दो को दुख देने वाले हैं। उन्हों को मैं आए असुर से देवता बनाता हूँ। ये खुशी उनकी ही है। और कोई की ताकत नहीं। गाया भी जाता है– मनुष्य से देवता किए करतन.....देवताएँ होते हैं सतयुग में। तो ज़रूर कलियुग अंत में समझाते हैं। कलियुग है काँटों का जंगल, सतयुग है गार्डन ऑफ अल्लाह। वो सभी को सुख देने वाले हैं। द्वापर–कलियुग में सभी दुख देने वाले हैं। तुम अब इस काले रावण पर जीत पाते हो। बिल्कुल आइरन एज तमोप्रधान हैं। तुम काले गुड़ियों को गौरा बनाते हैं। इस समय सभी काली गुड़ियाँ हैं। बाबा उनको गौरा बनाए स्वर्ग में उड़ाते हैं। स्वर्ग में विख नहीं होती। बच्चे तो वहाँ भी होते हैं। सतयुग 1250 वर्ष चलता है। वो तो लाखों वर्ष आयु दिखाते हैं, तो क्या इतने वर्ष बच्चे पैदा नहीं होते थे? वृद्धि तो होती होगी ना! फिर उन्हों की तो महिमा गाई जाती है– सर्वगुण सम्पन्न... सम्पूर्ण निर्विकारी, तो फिर विकार की तो बात ही नहीं उठती; परन्तु शास्त्रों में झूठ लिख दिया है। कहा भी जाता है– झूठी माया..... तो शास्त्र भी झूठे हुए। सतयुग–त्रेता में तो शास्त्र होते नहीं। विद्वान आदि सभी अनाड़ी ठहरे, जो झूठे शास्त्र बनाए हैं। ऐसे अनाड़ी फिर अपन को भगवान समझते हैं और श्री–2 कहाते। कहाँ देवताओं की श्री का टाइटल उन्होंने अपन पर रखा है। अब तो सबको श्री कह देते। प० सर्वव्यापी है। बाप कहते, तुम तो सबसे तमोप्रधान, भ्रष्ट हो, एक/दो को दुख देते रहते हो। बाप कहते हैं, अब गीत भी प्रैक्टिकल बनाओ। बाप आया है, हमने जाना–अपनाया है। वो बाप हमारी झोली भर रहे हैं। गीत बनाने में भी ज्ञान बल चाहिए और गाने वाला भी अच्छा चाहिए। तो तुमको ऐसे गीत बनाने हैं जो मनुष्य सुन, समझे, बरोबर भगवान आया है, जो राजाओं का राजा बनाए रहे हैं। देखो, बाहर में पढ़े–लिखे हैं तो कितनी फलक है! यहाँ तो कैसी कुब्जाएँ, अहिल्याएँ हैं। भारतवासी हैं ही तमोप्रधान। विलायत वालों को कॉपी करते हैं। जैसे बंगूला हंस के खब लगाता है। कहानी है ना एक। तो ये समझते नहीं कि हम तमोप्रधान बंदर बन पड़े हैं। एक तरफ कर्जा लेते रहते और फिर दूसरों को कर्जा देते रहते। अब इनको कहे कौन? स्वयं बाप के समझाने वाला तो कोई है नहीं। कल्प पहले भी पाण्डव पति ने बहुत समझाया था; परन्तु न समझे तो विनाश को प्राप्त हुए। लड़ाई यवनों और कौरवों की लगनी है। पार्टीशन में कितने मरे। अब पार्टीशन की बात नहीं। अब तो जो जहाँ जास्ती होंगे, वो मारेंगे। इसको कहा जाता रक्त की नदियाँ। फिर यहीं घृत की नदियाँ बहनी हैं। बाकी यादव तो धक से खलास होंगे। जैसे वो मुर्दे को मशीन में डाल राख कर देते वैसे वो बॉम्ब्स से खलास होंगे। तो ये क्लीयर लिखना चाहिए– यादव, कौरव, पांडव क्या करत भय। इन बातों को हम जानते और वर्णन करते हैं। क्यों? हमारा एक ही सतगुरु प० है। कौरवों के तो अनेका अनेक गुरु हैं। ये बातें समझानी चाहिए। टेप में भी मुरली निकलती हैं; परन्तु यह तो ब्राह्मण ही सुनेंगे। शूद्र सुनेंगे तो समझेंगे नहीं। कहेंगे, गीता पर कुछ है। वो तो समझते, गीता का

लेने से तैर जाएँगे; परन्तु यहाँ तो मेहनत है। 5 विकार रूपी रावण पर जीत पानी है और ज्ञान की धारणा भी है तो बहुत सहज अबलाओं के लिए। साहुकारों लिए तो बड़ा मुश्किल है। जीते जी मरना, बलि चढ़ना, मासी का घर नहीं। बनारस में, काशी पर बहुत बलि नहीं चढ़ते। कोटों में कोई निकलते। वैसे ज्ञान में भी कोटों में कोई निकलते। यहाँ तो जीते जी मरना है, नहीं तो वारिस कैसे बने! गोद में बच्चा लेते हैं तो भी सिर्फ नुख बदलती है। यहाँ भी शूद्र से ब्राह्मण बनना है, तब ही फिर दैवी सम्प्रदाय में जाएँगे। बाप समझाते तो बहुत है; परन्तु जब बच्चे सुजाग हो। माया बहुत अच्छे–2 पर भी वार करती है। विकार सभी दुश्मन तो हैं। उनमें काम महा दुश्मन है। विकार में जाते हैं तो क्रोध भी आ जाता है। फिर लोभ, मोह। सभी विकारों का मूल है देह–अहंकार। देह–अहंकार आने से अन्य विकार वार करते हैं; इसलिए बाप कहते हैं, सदैव मीठे रहो। पुरुषार्थी तो सभी हैं। चमाट माया की सभी को लगती है; परन्तु हमारा काम है मीठा हो रहना। मंसा–वाचा–कर्मणा सभी को सुख पहुँचाना। थॉट वर्ड डीड। बुद्धि का योग उनसे लगाना है। ज्ञान सुनना और सुनाना है और अच्छे कर्म करने हैं। देवताओं जैसा बनना है। बाप से जो धन मिलता है सो दान दे असुर को देवता बनाना है। अच्छा, बापदादा की बच्चों को नमस्ते। मम्मा तो बॉम्बे नमस्ते करती होगी। माँ–बाप कहते हैं, बच्चे तो मालिक हैं। हमारे तख्त पर तुम बच्चों को विजय पहननी। शिवबाबा तो ऐसे नहीं कहेंगे। तुम जानते हो, मम्मा–बाबा स्वर्ग के पहले मालिक बनेंगे। उनके पीछे तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तख्त के मालिक बनेंगे। अच्छा, ॐ